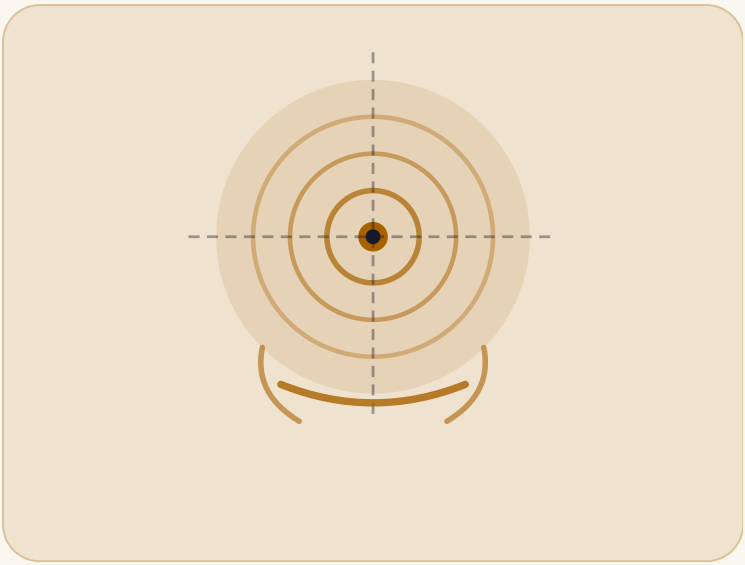

हंगरी

बाएँ हाथ से स्वर्ण पदक जीतने वाला निशानेबाज़

1938 में एक ग्रेनेड धमाके ने उनका वह हाथ छीन लिया जिससे वे निशाना साधते थे। हार मानने के बजाय उन्होंने बाएँ हाथ से निशाना लगाना सीखा और दो ओलंपिक स्वर्ण पदक जीते।

कहाँ बुडापेस्ट

कौन कैरोली ताकाक्स, सेना के एक निशानेबाज़ जिन्हें अपने दूसरे हाथ से नए सिरे से शुरुआत करनी पड़ी

कब 1938 से 1952

4 मिनट में पढ़ें

कहानी

1938 में कैरोली ताकाक्स 28 साल के थे। वे हंगरी की सेना में सार्जेंट थे। वे दुनिया के चोटी के पिस्टल निशानेबाज़ों में भी गिने जाते थे। जब वे गोली चलाते, तो निशाना लगभग हमेशा लक्ष्य के ठीक बीच में लगता था।

हंगरी में लोग उनका नाम जानते थे। सबको उम्मीद थी कि वे 1940 के ओलंपिक खेलों में स्वर्ण पदक जीतेंगे। पहले सेना के नियमों के तहत केवल अफसरों को ही राष्ट्रीय टीम में शामिल होने की अनुमति थी। ताकाक्स सिर्फ एक सार्जेंट थे। लेकिन 1938 तक नियम बदल गया। रास्ता खुल गया था। वे दुनिया को अपना हुनर दिखाने के लिए तैयार थे।

वह दिन जब सब कुछ टूट गया

फिर 1938 की पतझड़ आई। ताकाक्स अपनी सैन्य टुकड़ी के साथ एक प्रशिक्षण मैदान में थे। उनके हाथ में एक जिंदा ग्रेनेड थमाया गया। अचानक कुछ भयानक गड़बड़ हो गई। ग्रेनेड में खराबी थी। वह सीधे उनके दाएँ हाथ में ही फट गया।

धमाके ने उनके हाथ के चिथड़े उड़ा दिए। सैनिक उन्हें तुरंत बुडापेस्ट के एक अस्पताल ले गए। डॉक्टरों ने उन्हें बचाने के लिए घंटों मेहनत की। उन्होंने उनकी जान तो बचा ली, लेकिन उनका दायाँ हाथ पूरी तरह नष्ट हो गया। जिस हाथ से वे बंदूक पकड़ते थे और अपना नाम लिखते थे, वह हमेशा के लिए चला गया था।

ताकाक्स ने एक महीना अस्पताल के बिस्तर पर बिताया। दोस्त उनसे मिलने आए। उन्होंने एक ऐसे नौजवान को देखा जिसका सपना एक ही पल में खत्म हो गया था। हार मान लेना बहुत आसान होता। वे पूरी ज़िंदगी यह पूछने में बिता सकते थे कि उनके साथ ही ऐसा क्यों हुआ।

लेकिन ताकाक्स ने एक फैसला किया। जो खो चुका था, उस पर वे रोए नहीं। उन्होंने देखा कि उनके पास क्या बचा है। उनकी आँखें अब भी सलामत थीं। उनका दिमाग अब भी तेज़ था। और उनका बायाँ हाथ अब भी उनके पास था।

चुपचाप अभ्यास

अस्पताल से निकलते ही ताकाक्स फिर से काम में जुट गए। वे क्या कर रहे थे, यह उन्होंने किसी को नहीं बताया। उन्हें किसी की सहानुभूति नहीं चाहिए थी। वे बस फिर से निशाना लगाना चाहते थे।

उनका बायाँ हाथ कमज़ोर था। शुरुआत में वे बमुश्किल एक कलम पकड़ पाते थे। भारी पिस्टल हाथ में डगमगाती थी। वज़न से उनका बायाँ हाथ काँपता था। हर गोली का झटका उनकी कलाई में दर्द पैदा करता था।

दिन-ब-दिन वे अकेले और चुपचाप निशानेबाज़ी के मैदान में जाते रहे। उन्होंने धीरे-धीरे सांस लेना और अपने कंधे को स्थिर रखना सीखा। हर रोज़ वे सैकड़ों गोलियों का अभ्यास करते थे।

उन्हें बिल्कुल नए सिरे से सीखना था, जैसे कोई बच्चा चलना सीखता है। धीरे-धीरे उनका बायाँ हाथ मज़बूत होने लगा। हाथ का काँपना बंद हो गया। उनकी पकड़ पक्की हो गई। उनकी गोलियाँ एक बार फिर लक्ष्य के केंद्र के करीब लगने लगीं।

1939 के वसंत में बुडापेस्ट में हंगरी की राष्ट्रीय पिस्टल चैंपियनशिप आयोजित हुई। सबको हैरान करते हुए ताकाक्स हॉल में दाखिल हुए।

उनके पुराने साथी दौड़कर उनसे मिलने आए। उन्होंने नरमी से उनका बायाँ हाथ थामा। मुकाबला देखने आने के उनके साहस की उन्होंने तारीफ की। उन्होंने सोचा कि वे अपने दोस्तों की हौसलाअफज़ाई करने आए हैं।

ताकाक्स मुस्कुराए और सिर हिलाया। उन्होंने धीरे से कहा, “मैं यहाँ देखने नहीं आया हूँ। मैं मुकाबला करने आया हूँ।”

बाकी निशानेबाज़ सन्न रह गए। ताकाक्स निशानेबाज़ी की कतार में खड़े हुए। उन्होंने बाएँ हाथ से पिस्टल निकाली। जब निशाने घूमे, तो उन्होंने पूरी तेज़ी और अचूक निशाने के साथ गोलियाँ दागीं।

दिन के अंत तक ताकाक्स ने राष्ट्रीय चैंपियनशिप जीत ली थी। वे एक बार फिर हंगरी के सर्वश्रेष्ठ निशानेबाज़ बन चुके थे। उसी गर्मी में उन्होंने स्विट्जरलैंड में विश्व चैंपियनशिप में हंगरी की टीम को स्वर्ण पदक दिलाने में मदद की।

युद्ध के बीच लंबा इंतज़ार

ताकाक्स फिर से शीर्ष पर थे। उनकी नज़रें 1940 के ओलंपिक खेलों पर टिकी थीं। वे दुनिया के सबसे बेहतरीन निशानेबाज़ों का सामना करने के लिए तैयार थे।

तभी दुनिया पर मुसीबत आ पड़ी। यूरोप में द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ गया। 1940 के ओलंपिक खेल रद्द कर दिए गए। चार साल बाद, 1944 के ओलंपिक खेल भी रद्द हो गए।

ताकाक्स को पूरे दस साल इंतज़ार करना पड़ा। पूरे हंगरी में युद्ध फैल गया। शहर तबाह हो गए और आम ज़िंदगी बिखर गई। उन काले सालों में कई खिलाड़ियों की हिम्मत टूट जाती। उनकी जवानी के सबसे बेहतरीन साल हाथ से फिसल रहे थे।

जहाँ भी गोलियाँ और जगह मिलती, ताकाक्स अभ्यास करते रहे। जब युद्ध खत्म हुआ और 1948 में ओलंपिक खेल लौटे, तब तक ताकाक्स 38 साल के हो चुके थे। कई लोगों को लगा कि वे जीतने के लिए बहुत बूढ़े हो चुके हैं।

> मुकाबले से पहले उन्होंने कहा, “मैं यहाँ सीखने आया हूँ।” जब वे जीत गए, तो उनके प्रतिद्वंद्वी ने कहा: “आप काफी सीख चुके हैं।”
>
> **कैरोली ताकाक्स और कार्लोस साएंज़ वैलिएंटे, 1948 ओलंपिक**

1948 की गर्मियों में ताकाक्स ओलंपिक खेलों के लिए लंदन पहुँचे। उन्होंने 25-मीटर रैपिड-फायर पिस्टल स्पर्धा में हिस्सा लिया।

मुकाबला शुरू होने से पहले अर्जेंटीना के विश्व चैंपियन कार्लोस साएंज़ वैलिएंटे उनके पास आए। उन्होंने ताकाक्स से पूछा कि वे लंदन क्यों आए हैं।

ताकाक्स ने सादगी से जवाब दिया। उन्होंने कहा, “मैं यहाँ सीखने आया हूँ।”

मुकाबला बेहद कड़ा था। घूमने वाले पाँच निशानों पर वार करने के लिए कुछ ही सेकंड मिलते थे। ताकाक्स पूरी तरह शांत रहे। उन्होंने अपना बायाँ हाथ उठाया। तेज़ी से पाँच धमाके गूँज उठे।

जब अंकों की गिनती हुई, तो ताकाक्स ने स्वर्ण पदक जीत लिया था। उन्होंने 580 अंक बनाए और विश्व रिकॉर्ड को दस अंकों से तोड़ दिया।

समारोह में साएंज़ वैलिएंटे रजत पदक लेने आगे आए। उन्होंने ताकाक्स को देखा और मुस्कुराए। अर्जेंटीना के निशानेबाज़ ने कहा, “आप काफी सीख चुके हैं।”

1938	10	2
वह धमाका जिसने उनका हाथ छीन लिया	युद्ध के दौरान इंतज़ार के साल	जीते गए ओलंपिक स्वर्ण पदक

चार साल बाद, 1952 में फ़िनलैंड के हेलसिंकी में ओलंपिक खेल आयोजित हुए। ताकाक्स अब 42 साल के थे। बहुत से लोगों को शक था कि वे दोबारा जीत सकते हैं।

एक बार फिर उन्होंने सबको गलत साबित कर दिया। ताकाक्स ने दूसरी बार स्वर्ण पदक जीता। वे इस स्पर्धा में लगातार दो स्वर्ण पदक जीतने वाले इतिहास के पहले निशानेबाज़ बने।

मंच पर उनके ठीक पीछे रजत पदक जीतने वाले सिलार्ड कुन थे। कुन हंगरी के एक युवा निशानेबाज़ थे जिन्हें ताकाक्स कई सालों से सिखा रहे थे।

ताकाक्स ने 1956 में ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न में अपने तीसरे ओलंपिक खेलों में भी हिस्सा लिया। 46 साल की उम्र में वे आठवें स्थान पर रहे। बाद में वे हंगरी में युवा निशानेबाज़ों के पूर्णकालिक कोच बने।

वे 1976 में 65 साल की उम्र में अपने निधन तक बुडापेस्ट में रहे। उन्होंने दुनिया को एक सरल सच सिखाया। जब ज़िंदगी आपका सबसे अच्छा हाथ छीन ले, तो दूसरे हाथ को जीतने के लिए तैयार करो।

कब क्या हुआ

- **1938** एक ग्रेनेड धमाके में उनका दायाँ हाथ नष्ट हो जाता है।
- **1939** वे अपने बाएँ हाथ से हंगरी की राष्ट्रीय चैंपियनशिप जीतते हैं।
- **1948** वे लंदन में अपना पहला ओलंपिक स्वर्ण पदक जीतते हैं।
- **1952** वे हेलसिंकी में अपने खिताब की रक्षा करते हैं और स्वर्ण पदक जीतते हैं।
- **1956** वे मेलबर्न में अपने तीसरे ओलंपिक खेलों में भाग लेते हैं।
- **1976** 65 वर्ष की आयु में बुडापेस्ट में उनका निधन हो जाता है।

दूसरा अध्याय

यह कहानी ख़ास क्यों है

ज़्यादातर खिलाड़ी तब उम्मीद छोड़ देते हैं जब उनका सबसे खास हुनर या औज़ार छिन जाता है। ताकाक्स ने अपने करियर के चरम पर अपना वह हाथ खो दिया जिससे वे निशाना लगाते थे। जो चला गया, उस पर वे रोए नहीं। उन्होंने देखा कि उनके पास अब भी क्या बचा है, और वे दोबारा काम में जुट गए।

हमारी राय

जो खो गया, उस पर उन्होंने समय बर्बाद नहीं किया। जो बचा था, उसे ही उन्होंने अपनी सबसे बड़ी ताकत बना लिया।

तीसरा अध्याय

हम क्या सीख सकते हैं

1 जो बचा है, उसी के साथ काम करें

ताकाक्स ने उस हाथ पर ध्यान नहीं दिया जो खो चुका था। उन्होंने उस हाथ पर ध्यान लगाया जो अब भी काम कर रहा था।

यह आज़माएँ: इस हफ़्ते जब कोई योजना बिगड़े, तो उन तीन साधनों को लिखें जो अब भी आपके पास हैं और उनका इस्तेमाल करें।

2 शांति से अभ्यास करें

उन्होंने अपनी वापसी का ढिंढोरा नहीं पीटा। जब तक वे तैयार नहीं हो गए, उन्होंने अकेले अभ्यास किया।

यह आज़माएँ: किसी को बताए बिना तीस दिनों तक अकेले में किसी एक नए कौशल पर काम करें।

3 लंबी रुकावटों में भी लगे रहें

ओलंपिक तक पहुँचने के लिए उन्हें विश्व युद्ध के बीच पूरे दस साल इंतज़ार करना पड़ा।

यह आज़माएँ: अपने किसी ऐसे लक्ष्य को चुनें जो रुका हुआ है, और आज उस पर एक छोटा कदम उठाएँ।

4 अपने हुनर को आगे बढ़ाएँ

अपनी जीत के बाद उन्होंने युवा निशानेबाज़ों को सिखाया, और उनके अपने छात्र ने रजत पदक जीता।

यह आज़माएँ: इस हफ़्ते किसी युवा साथी या टीम सदस्य को कोई एक उपयोगी सीख दें।

साथ ले जाने वाली एक बात

जब आपका सबसे अच्छा हाथ न रहे, तो दूसरे हाथ को तैयार कीजिए।

स्रोत (अंग्रेज़ी में)

International Olympic Committee
Károly Takács - Athlete Profile

Olympedia
Károly Takács Biographical Profile and Results

Encyclopaedia Britannica
Károly Takács - Hungarian Shooter and Olympian

तथ्य-जाँच नोट: ताकाक्स और साएंज़ वैलिएंटे के बीच हुई बातचीत के अलग-अलग ब्योरे मिलते हैं, लेकिन ओलंपिक रिकॉर्ड इस बातचीत और उनके 580 के विश्व रिकॉर्ड स्कोर की पुष्टि करते हैं। “हमारी राय” वाली पंक्तियाँ हमारी अपनी व्याख्या हैं। बाकी सब ऊपर दिए स्रोतों से है।